The Original Story by Gulfaam Khan
July 2005

रेशमा दि सेल्सगर्ल !

गुलफ़ाम ख़ान

एक बहुत ही पुराने गाने की तलाश थी मुझे. इसे मुकेश और लता ने गाया था. फ़िल्म का नाम मुझे याद नहीं था, सिर्फ गाने के बोल ही याद थे... कुछ इस तरह था गाना.... ' छोड़ गए बालम, मुझे हाय अकेला छोड़ गए... ' सीडी और कैसेटों की काफी दुकानों में ढूंढा, पर नहीं मिला. किसी दोस्त ने बताया कि मुंबई में एक जगह है लैमिंगटन रोड, शायद वहां मिल जाए.

मैं लैमिंगटन रोड पहुंचा. इत्तफाक से जिस पहली दुकान पर नजर पड़ी, वहीं ये गाना मिल गया. लेकिन वहां हुआ क्या, ये मैं जरूर आपको बताना चाहूंगा...

दुकान में प्रवेश किया तो देखा वहां कैश काउंटर पर एक आदमी को छोड़ कर बाकी सब लड़कियां हैं. सारी की सारी सेल्स गर्ल्ज थीं. कुछ ने सीडी का काउंटर संभाल रखा था, तो कुछ ने गेम और साफ्टवेयर का. मैं सीडी के काउंटर पर गया. लड़की ने मुस्कुराकर मेरा स्वागत किया और प्रोफेशनल अंदाज में बोली....
''यस सर, वॉट केन आई डू फॉर यू ?''

ये मेरी बहुत बुरी आदत है कि जब भी मैं किसी लड़की को देखता हूं तो, न चाहते हुए भी मेरी नजर सबसे पहले उसकी छाती पर पड़ती है. यहां भी वैसा ही हुआ....मेरी नजर उसके बड़े बड़े बूब्स पर पड़ी और फिर मैं संभल गया. उसने भी मेरी इस हरकत को भांप लिया और दोपट्टे के पल्लू से अपने दिलकश कबूतरों को ढांकते हुए फिर बोली...
'' कैन आई हेल्प यू ? ''

जी तो चाहा कि कह दूं..... ' इन कबूतरों को पालना चाहता हूं... ' लेकिन मैंने कहा.. '' जी, मैं एक बहुत ही पुराना गाना तलाश कर रहा हूं.... मिल नहीं रहा है.... अगर आपके पास हो तो.... ''

वो झट बोली..... '' गाने के बोल बताइए.''

'' छोड़ गए बालम, मुझे हाय अकेला छोड़ गए.... ''

वो अपने दिमाग पर जोर डालने की एक्टिंग करने लगी और सोचते हुए बोली..... '' ऊं हूं... मुझे तो ऐसा कोई गाना याद नहीं आ रहा है... ठहरिए, मैं सर से पूछती हूं..... ''
ये कह कर वो उस अधेड़ आदमी के पास गई जो कैश काउंटर पर बैठा था... थोड़ी ही देर बाद वो वापस आई और बोली..... '' है हमारे पास.... ये फिल्म बरसात का गाना है. आप एक मिनट रुकिए... मैं

बरसात फिल्म की सीडी अभी लाती हूं...''
वो ऊपर की मंजिल पर चली गई. कुछ ही मिनटों बाद वापस आई तो उसके हाथ में एक सीडी थी. मुस्कुराते हुए बोली... ''आपका गाना मिल गया... लेकिन एक गाने के लिए आपको पूरी सीडी खरीदनी पड़ेगी..... इसमें कुछ और भी फिल्मों के पुराने गाने हैं.... ''
'' कोई बात नहीं... लेकिन देखिए वो गाना इसमें है या नहीं...''
'' जरूर होगा..... इस सीडी में बरसात फिल्म के गाने भी हैं.... ''
'' हां, लेकिन वो पर्टिक्युलर गाना इसमें है भी कि नहीं.... ''

वो सीडी के कवर पर लिखे गाने के लिस्ट को देखने लगी और बोली... ''क्या बोल बताए थे आपने?''
''छोड़ गए बालम.... ''

वो एक एक गाना पढ़ने लगी.... '' दुम... नहीं..दम भर जो इधर मुंह फेरे... बरसात में हमसे मिले.... हवा में उड़ता जाए.... चोड गए .... ओह सॉरी ....छोड़ ... छोड़ गए बालम... ये...
ये लीजिए...'' वो जल्दी से सीडी मेरे हाथ में थमाते हुए बोली और फिर दूसरी तरफ देखने लगी.

मैं अपनी हंसी रोक न सका... वो भी शर्म से लाल हो गई और जबरदस्ती मुस्कुराते हुए बोली... सॉरी ...सॉरी....

मैंने कहा... कोई बात नहीं.... और मुझे फिर दोबारा हंसी आ गई...
वो थोड़ा सा नर्वस थी... बोली.. .. '' देखो ना... छोड़ की स्पेलिंग ऐसी होती है क्या....? सी डबल एच लिखना चाहिए ना ? यहां सिंगल एच ही है....''
'' हां सच कहा आपने... आपने तो चोड पढ़ा.... कई लोग तो इसे चोद.... '' मैं कहते कहते रुक गया.
वो पहले कैश काउंटर और फिर अपनी साथी लड़कियों की तरफ देखते हुए बोली,
''और कुछ ? ''
'' जी बस... इतना ही काफी है... अच्छा लगा....!''
'' व्हाट... ?''
''अच्छा लगा कि इतना ढूंढने के बाद आखिर ये गाना मिल ही गया ''
'' और कुछ ? ''
'' नहीं बस... कितने पैसे हुए ? ''
'' मैं बिल बना देती हूं... आप वहां काउंटर पर पेमेंट कर दें...''

जब मैं घर आया तो सोचने लगा. उसके बूब्स तो ईरानी होटल की डबल रोटियों की तरह थे ही...
उसके होंठ भी कम सेक्सी नहीं थे. अगर ये होंठ मेरे लंड को कोमलता से दबा लें... तो क्या हो?
मेरे सारे शरीर में एक झुरझुरी सी आ गई.

रात को सपने में मैं उसे ले कर किसी हिल स्टेशन चला गया. सपना तो सपना ही है... मैंने देखा कि हम

दोनों नंगे ही पहाड़ियों की सैर कर रहे हैं. कभी मैं उसके कंधे पर हाथ रख कर चलता तो कभी उसकी कमर में बांहें डाल कर. कमर से मेरा हाथ फिसल कर उसकी नरम नरम संतरे की फांकों जैसी गांड पर रुक जाता. मैं सपने में उसकी गांड के मुलायम स्पर्श और सेक्सी उभार को अच्छी तरह महसूस कर रहा था. कभी मैं आगे चलता, तो कभी पीछे. आगे चलने से मुझे उसके नंगे शरीर का सारा उतार-चढ़ाव किसी बलखाती पहाड़ी की सड़क जैसा लगता. उसकी सख्त छातियां ताजमहल के गुंबद लग रहे थे. कमर के गोल कर्व कामदेव की कमान जैसे तने हुए थे.
पीछे से उसकी गोल गोल कोमल चूतड़, यूं ऊपर नीचे हो रही थी, जैसे कोई सी-सॉ ऊपर नीचे झूल रही हो. चूतड़ के बीच की दरार पसीने से तरबतर थी और मुझे नायग्रा का झरना याद आ रहा था.
मेरी सहनशक्ति जवाब दे गई और मैंने अपना तना हुआ लंड उस झरने में उतार दिया. जैसे डूब गया मैं. हिचकौले खाने लगा. मैं अपने लंड को उसकी गांड के बीच में घुसाना चाहता था, पर गांड की वो दरार मानो किसी ने सिमेंट भर कर बंद कर दी हो.... मेरा लंड उसमें घुस ही नहीं पा रहा था. मैंने खूब जोर लगाया... लंड को उसकी गांड की दरार नहीं, तो कम से कम पीछे से उसकी चूत में ही डाल सकता.... पर न जाने क्यों सफल न हो सका. मैंने फिर ताकत लगाई और अबकी बार लंड को जोर से आगे की ओर झटका दिया. वो चिल्लाई.... 'पागल हो गए हो क्या ?' मैंने उसकी बात अनसुनी कर दी और एक बार फिर से जोरदार झटका दिया, ताकि लंड किसी भी तरह अपनी मंजिल तक पहुंच जाए. झटके से वो गिर पड़ी और मैं भी उसी के साथ चारो खाने चित हो गया. लंड पथरीली जमीन से टकराया और मैं चीख पड़ा.... बेहनचोद !!!

आंख खुली तो मैं पलंग से गिर कर फर्श पर पड़ा था. मेरा दायां हाथ अपने लंड को पकड़े हुए था, जिसमें जबरदस्त दर्द हो रहा था. अच्छा था कि मेरा कमरा अलग था और मैं दरवाजा बंद करके सोता हूं.... किसी को कुछ खबर नहीं हुई. घड़ी में टाइम देखा तो सुबह के साढ़े छह बज रहे थे. मैंने फिर सोने की कोशिश की, मगर नींद कहां से आती.... लंड का दर्द धीरे धीरे गायब हो गया, पर उसका तनाव नहीं गया. लंड उसी तरह जबरदस्त अंदाज में खड़ा था और किसी चूत की फिराक में धीरे धीरे हांफ रहा था. मजबूरन मुझे अपने हाथों से ही लंड को शांत करना पड़ा और जब ढेर सारा पानी निकल गया तो सुकून मिला. नहा धो कर कमरे से निकला तो घर वालों को काफी हैरानी हुई कि ९ बजे उठने वाला लड़का आज इतनी जल्दी कैसे उठ गया.

'' क्या आज कॉलेज जल्दी जाना है...?'' बड़े भाई ने पूछा
'' हां.... एक्स्ट्रा क्लासेस हैं.....'' और क्या कहता मैं. और जब कह दिया तो झक मार कर घर से बाहर निकलना भी था.....सो तैयार हो कर निकला और मेरे कदम फिर लैमिंगटन रोड की तरफ उठ गए.

दुकान बंद थी... बाजू के पान वाले से पूछा तो वो बोला.... '' दस बजे खुलती है दुकान... ''
मैंने घड़ी देखी, अभी साढ़े नौ ही बज रहे थे.... दूर जा कर खड़ा हो गया. जैसे तैसे दस बजे... और दुकान खुली. मैं उसी का इंतजार कर रहा था.... वो लगभग सवा दस बजे आई. जब वो दुकान में एंटर कर रही थी तो मैंने देखा, जीन्स में उसकी गांड का उभार बिल्कुल सपने में देखी हुई गांड की तरह ही था. मैं सोचने लगा..... सुबह का सपना वाकई सच होता है !

थोड़ी देर बाद मैं दुकान के अंदर गया. उसकी नजर मुझ पर पड़ी और उसके भाव देख कर मुझे ये अंदाजा

लगाने में देर न लगी कि उसने मुझे पहचान लिया है.
मैं सीधे उसके पास गया. वो जबरन मुस्कुरा कर बोली.... यस सर.... !
'' मुझे एक और सीडी चाहिए....''
'' कौनसी ?''
'' एक पुरानी फिल्म की.... अगर आपके पास हो तो... ''
'' फिल्म का नाम? ''
'' राजा हरीशचंद्र...''
उसने अपना सिर हिलाया और बोली..... '' सर को पूछती हूं...''
आज वो मुझे कुछ खूबसूरत भी नजर आई. बड़े बूब्स तो मेरी कमजोरी हैं ही, अगर सूरत भी अच्छी हो तो फिर तो ....
जल्द ही वो वापस आई और बोली... '' सर कह रहे हैं कि ये इतनी पुरानी फिल्म है कि इसके गाने अवेलेबल नहीं हैं...''
'' ओह...! '' मैं जबरदस्ती निराश हो कर बोला.... '' बैड लक !''
'' और कुछ ! ''
'' नहीं... यही चाहिए था.... खैर मैं कुछ देर बाद आऊंगा...''
'' क्यों ?'' उसने पूछा..
'' क्यों मतलब? आपकी दुकान में कोई क्यों आता है ? ''
'' अच्छा अच्छा.... सॉरी... जरूर जरूर.... यू आर मोस्ट वेलकम !''

कॉलेज छूटने के बाद मैं फिर उसी दुकान में पहुंचा. वो अबकी बार दूर से ही मुस्कुराई. जब मैं उसके पास पहुंचा तो वो खुद ही बोली.... '' कोई और पुरानी फिल्म ?''
'' हां....इस बार मुझे फिल्म चुदाई की सीडी चाहिए. ''
'' व्हाट ??? '' वो ऐसे बोली जैसे उसे बिजली का करंट लगा गया हो...
'' क्या हुआ? '' मैंने भी हैरानी जताई...
'' क्या कह रहे हैं ? ''
'' कोई अजीब बात कह दी क्या मैंने? ''
'' किस फिल्म की सीडी चाहिए आपको? ''
'' जुदाई फिल्म की....''
'' जुदाई !!! ''
'' हां...! आपने क्या सुना ? ''
'' नहीं नहीं ठीक है.... जुदाई की तो सीडी होगी ही...''
'' लेकिन मुझे पुरानी चुदाई की सीडी चाहिए....''
वो फिर चौंक गई और मुझे शक भरी नजरों से देखने लगी....
मैंने पूछा '' क्या हुआ? ''
'' कुछ नहीं... पुरानी मतलब.... ? उसमें एक्टर और एक्ट्रेस कौन थे ?''
'' जीतेन्द्र और शायद रेखा....'' मैंने यूं ही फैंक दिया.

वो ऊपर की मंजिल पर चली गई और थोड़ी देर बाद नीचे आई और कैश काउंटर की तरफ रुख किया.
दो तीन मिनट बाद आई और बोली.....'' सॉरी सर.... नई जुदाई की सीडी है.... पुरानी नहीं...''
मैं फिर अपने आपको निराश जताने लगा... वो मुझे ध्यान से देखने लगी.
फिर मैंने अपने मोबाइल फोन पर अपने दोस्त ऋषि का नंबर लगाया और बोला...
'' हां भैया... जुदाई की सीडी तो नहीं मिली... क्या करूं....''
वहां से ऋषि बोला..... '' अबे दिमाग खराब हो गया है क्या, भैया किसको बोल रहा है...''
'' अच्छा दूसरी दुकान में देखूं.... ओके ओके... जी... जी ...''
ऋषि फिर हैरानी से बोला... '' कहां है तू..... क्या बोल रहा हो ? ''
'' कौनसी.... ? लंड... लंडन..... कौनसा लंडन... ?''
मैंने चोर नजरों से देखा उसका चेहरा लाल हो गया था.
'' जी...? नाइट इन लंडन... अच्छा ... पूछता हूं भैया... ''
ऋषि मुझे गालियां देने लगा....मैंने फोन काटा और लड़की से पूछा...
'' नाइट इन लंडन की सीडी या कैसेट होगी आपके पास ?''
उसके चेहरे की लाली अभी तक कायम थी... वो बिना कुछ कहे नीचे ही शेल्फ में सीडी तलाश करने लगी.
थोड़ी ही देर में उसे सीडी मिल गई और वो आदत के अनुसार बोली....
'' और कुछ ''
'' नहीं बस... बिल बना दीजिए.''
वो सर झुका कर बिल बनाने लगी.

अगले दिन मैं फिर साढ़े दस बजे उसकी दुकान में पहुंच गया. इस बार उसने गुलाबी रंग की साड़ी पहनी थी. होंठों पर हल्के रंग की लिपस्टिक भी थी. साड़ी में उसे देख कर मुझे लगा कि वो उम्र में मुझसे कुछ बड़ी लग रही है. मैंने अंदाजा लगाया कि उसकी उम्र तीस या बत्तीस होगी. इस बार उसकी मुस्कुराहट कुछ गहरी थी. या शायद लिपस्टिक की वजह से ऐसा लग रहा था. ब्लाउज से उसकी बड़ी बड़ी छातियां जैसे बाहर निकल जाने को बेताब थीं. ब्लाउज का गला सामान्य से कुछ बड़ा ही था, जिसमें उसके cleavages गजब ढा रहे थे.
'' यस सर...'' उसने मुस्कुराते हुए पूछा... '' सीडी?''
''हां, एक और पुरानी फिल्म की सीडी... या कैसेट जो भी हो... अगर तो ''
'' फिल्म का नाम?''
'' गांड है तो जहान है... '' मैंने गांड शब्द जान बूझ कर हल्के से कहा.
वो घूर कर मुझे देखने लगी, शायद कुछ अंदाजा लगाने की कोशिश कर रही थी. मैं बेशरमों की तरह बोला,
'' है तो दे दीजिए... ''
'' क्या नाम बताया...?''
'' जान है तो जहान है...''
'' ऐसी तो कोई फिल्म आज तक नहीं आई...''
''आप सर से पूछिए.... '' मैंने कैश काउंटर की तरफ इशारा करते हुए कहा.
'' ठीक है '' ये कह कर वो कैश काउंटर की तरफ चली गई. थोड़ी देर बाद आई और बोली...

‘‘ सुनिए, सर आपसे बात करना चाहते हैं...’’
मुझे थोड़ी घबराहट होने लगी. कहीं साले को कोई शक तो नहीं हो गया.
मुझे देख कर वो बनियों जैसा मुस्कुराया और बोला... ‘‘ इतना पुराना पुराना गाना कायको मंगता है आपको... आप तो अबी बहोत जवान है... ’’
‘‘मेरे को नहीं मंगता है.... मेरा बड़ा भाई है उसको मंगता है.... वो कोई रिसर्च का काम कर रहा है... ’’
‘‘ अच्छा ! वेरी गुड... वेरी गुड... लेकिन आप जो भी गाना मांगता है... वो बहुत ही ओल्ड होता है.. ’’
‘‘ अब मैं क्या करूं.... मेरे को ओल्ड बहुत पसंद है....(मैं लड़की की तरफ देख कर बोला) मेरा मतलब है... मेरे भाई को...’’
‘‘ अब क्या करेंगा.... आप एचएमवी में जा कर पूछो ना... ’’
जी में आया कह दूं.... उधर तेरी बेटी बैठी है क्या ?
फिर मैंने पूछा.... ‘‘अच्छा, आपके पास वो गाना है क्या.... चूतक चूतक चूतिया... ’’
वो हंसने लगा और बोला... ‘‘ अरे अरे अरे... ये क्या बोलता है.... चूतक चूतक नहीं...तूतक तूतक... लेकिन ये तो नया गाना है.... पॉप भांगड़ा...! तुम्हारा भाई क्या करेगा इसका? ’’
‘‘ भाई को नहीं, ये मेरे को चाहिए...’’
‘‘अच्छा अच्छा.... उधर रेशमा से पूछ लो... मिल जाएंगा... ’’
‘‘रेशमा कौन? ’’
‘‘ अरे वही सेल्सगर्ल...’’
अच्छा तो उसका नाम रेशमा है....
मैं उसके पास पहुंचा और बोला... ‘‘रेशमा.... वो पॉप भांगड़ा है आपके पास... तूतक तूतक तूतिया...’’
वो मेरी तरफ देख कर बोली.... ‘‘मेरा नाम किसने बताया... ’’
‘‘चंदू साब ने... ’’
‘‘ कौन चंदू साब?’’
‘‘ वो जो उधर काउंटर पर बैठे हैं...’’
‘‘ अरे, वो तो मेहता साहब हैं... ’’
‘‘ हां, उनका पूरा नाम चंदू मेहता है ! ’’
‘‘ अच्छा, मुझे तो मालूम ही नहीं था... ’’
‘‘ चूतक, चूतक चूतिया....है आपके पास? ’’
वो सपाट नजरों से मुझे देखती हुई बोली... ‘‘ अब मैं समझ गई... तुम जानबूझ कर गलत शब्द बोलते रहे हो अब तक ’’
‘‘ अरे वाह, एक ही झटके में आप से तुम...’’
‘‘ नहीं है, ये गाना...’’ वो नाक फुला कर बोली और दूसरी तरफ बेकार में सीडी वगैरह को ठीक करने लगी.
‘‘ मगर चंदू साब तो कह रहे थे कि है....’’
‘‘ हां तो उनही से ले लो...’’

उस दिन मैंने इरादा किया कि आज उसे रास्ते में पकडूंगा. इसलिए दुकान बंद होने का इंतजार करने लगा और

दूर जा कर खड़ा हो गया.
दुकान ७ बजे शाम को बंद हो गई और वो बाहर निकली.
मैं उसके पीछे हो लिया.
थोड़ी देर पीछा करने के बाद ग्रांट रोड स्टेशन आने से पहले ही मैंने उसे जा लिया. बिल्कुल उसके पास पहुंच कर मैंने धीरे से कहा... '' हाय !''
वो चौंक कर मुझे देखने लगी. थोड़ी सी घबरा भी गई. मैंने फिर हाय कहा.
वो बोली... '' क्या बात है...क्या काम है? ''
'' सॉरी, मैं जरा लेट हो गया, आपकी दुकान तो बंद हो गई.... सात बजे ही बंद कर देते हैं क्या ?''
'' हां....'' अब उसके कदम तेज हो गए थे.
'' अरे आप दौड़ क्यों लगा रही हैं....''
'' मुझे जल्दी है... सात बीस की ट्रेन पकड़नी है...''
'' कहां रहती हैं आप? ''
उसने जवाब नहीं दिया.
'' दरअसल मुझे एक और पुरानी फिल्म की सीडी चाहिए थी... अरजंट ''
'' अब कल आइए... ''
'' हां, वो तो अब... कल ही...''
'' या दूसरी दुकानें भी हैं... वहां ट्राई कीजिए... कुछ दुकानें आठ साढ़े आठ तक खुली रहती हैं... ''
'' हां, मगर वहां आप तो नहीं मिलेंगी ना...''
'' व्हाट? क्या मतलब? ''
मैंने हिम्मत करके कहा...'' देखिए, सच कहता हूं... अब तक मैंने जितना भी सामान आपकी दुकान से खरीदा है... बस यूं हीं... सिर्फ आपसे मिलने के लिए... ''
वो रुक गई और मेरी आंखों में देखती हुई बोली... '' तुम्हारे इरादे अच्छे नहीं लगते...''
'' हां, वो तो है...''
'' क्या मतलब?''
'' अब मतलब तो आप समझ ही गई होंगी.... मैं आपको डिनर, मतलब लंच पर ले जाना चाहता हूं...''

काफी पापड़ बेलने पड़े उसे पटाने के लिए. आखिर वो रास्ते पर आ ही गई....पता चला कि उसका डिवोर्स हो चुका है और ससुराल वालों ने उसे घर से निकाल दिया था. माइका दिल्ली में था और वो अपने मांबाप के पास भी रहना नहीं चाहती थी. यहां बोरिवली में वो एक चॉल में किराये पर रहती थी.

काफी कोशिश के बाद मैंने उसे अपने साथ सोने के लिए राजी कर ही लिया. अब वो काफी खुल गई थी.
बोली.... '' कहां ले जाओगे...अपने घर? ''
'' नहीं, वहां तो मेरी फेमिली है...''
'' फिर... ? ''
'' किसी होटल में...''

मैंने एक सस्ते मगर अच्छे होटल में कमरा बुक कर लिया. उस दिन उसने काम से छुट्टी ले ली थी. मुझे ये सोच सोच कर ही मजा आ रहा था कि सारा दिन उसे खूब चोदूंगा. मैं उसकी चूत चाटूंगा और वो मेरा लंड अपने कोमल होंठों से मसलेगी.

तयशुदा दिन हम होटल में पहुंचे. कमरा पहले से ही बुक था. दोपहर के दो बज रहे थे. हमने बढ़िया सी बियर पी और खाना खाया और फिर मेरे सबर का पैमाना भर गया. मैंने उससे कहा…
'' रेशमा, हर रोज रात को तुम्हें सपने में चोदता रहा हूं… आज वो दिन आ गया जब सचमुच…''
वो बोली…'' मैं भी बिना मर्द के कई दिनों से प्यासी हूं… अभी तक बैंगन और लौकी से काम चला रही थी…आज मर्द का लंड मिलेगा…. पर… ''
'' पर क्या ?''
'' अभी तो तुम इतने मर्द नहीं लगते, कितना बड़ा है तुम्हारा….?''
'' देखोगी ?''
'' हां दिखाओ…''
मैंने झट अपने सारे कपड़े उतारे. लंड तमतमा कर फड़फड़ा रहा था…वो बड़े गौर से मेरे लंड को देखने लगी और फिर कहा… '' चलेगा !''
'' अरे, ६ इंच के लौड़े को देख कर कह रही ही…चलेगा… ! दौड़ेगा बोलो ना…''
'' ६ इंच का लौड़ा क्या खाक दौड़ेगा ? दौड़ने के लिए तो कम से कम आठ इंच का घोड़ा चाहिए !''
मुझे गुस्सा आ गया और मैं बोला…. '' पहले आजमा तो लो इस छह इंच के टट्टू को, क्या सरपट दौड़ता है…. मान जाओगी…''
'' अच्छा…? '' ये कह कर वो आगे झुक गई और अपने हाथों से मेरे लंड को पकड़ लिया. उसका पकड़ना था कि मेरा फड़फड़ता हुआ लंड आधा इंच और लंबा हो गया. वो धीरे धीरे मेरे लंड के सुपाड़े को सहलाने लगी. मुझे हल्का हल्का नशा आने लगा. कमरे में एसी ऑन था. फिर भी मैं पसीने पसीने हो गया.
उसने धीरे से धक्का दे कर मुझे बेड पर लिटा दिया और मेरे दोनों टांगों के बीच अपना मुंह ले जाकर मेरे लंड के सुपाड़े को चाटने लगी. मैं उसके मुलायम होंठों के स्पर्श को अच्छी तरह महसूस कर रहा था. ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी और ही दुनिया में हूं.
धीरे धीरे उसने मेरे पूरे लंड को अपने मुंह में ले लिया और आगे पीछे हो कर उसे चूसने लगी. मेरे सारे जिस्म में चींटियां रेंगने लगीं. उसने अपनी गति बढ़ा दी और जल्दी जल्दी लंड को चूसने लगी. थोड़ी ही देर में लंड से धड़ा धड़ा पानी निकलने लगा जिसे उसने गड़ाप से पी लिया और फिर चूस चूस कर सारा माल हड़प कर लिया. लंड कुछ पलों तक शांत बना रहा. मैं भी बेड पर निढाल सा पड़ा था. वो उठ कर बोली…
'' क्यों मर्द… बस क्या? और भी कुछ करना है ?''
'' जाने मन… अभी तो पूरा दिन बाकी है…. बस एक मिनट… अभी तैयार हो जाता हूं… '' ये कह कर मैंने उसके भी सारे कपड़े उतार दिए और अब वो मेरे सामने बिल्कुल नंगी खड़ी थी. मैं उसे घूम घूम कर चारों ओर से देखने लगा. वो हंस कर बोली… '' ऐसे क्या देख रहे हो ?''
'' देख रहा हूं, सपने में जो हसीना देखी थी, वही अब सामने भी है… वही रंग रूप, वही उतार चढ़ाव, वही कर्व, वही दायरे, वही चूत, वही गांड… वही चूची, वही जांघ…तुम तो सचमुच माल हो यार !''

‘‘ कमाल है, माल को देख कर भी धमाल नहीं कर रहे हो....’’ वो हंसने लगी.
मैं उससे लिपट गया. दोनों नंगे एक दूसरे से चिमटे हुए खड़े थे. फिर हम दोनों अपने आप ही धीरे धीर नाचने लगे. कमरे में एफएम रेडियो बज रहा था. उसकी म्यूजिक भी काम आ रही थी.
मैं उससे यूं लिपटा हुआ था जैसे उसके अंदर ही समा जाऊंगा. वो बहुत भावुक हो रही थी. उसकी चूत से पानी रिस कर मेरी टांगों में बह रहा था.
मैंने उसे बेड पर लिटा दिया. उसने खुद ही अपनी टांगे ऊपर कर लीं, जिससे उसकी चूत खुल गई. उसकी चूत देख कर लग रहा था कि उसके पति ने ज्यादा नहीं चोदी होगी उसे. मैंने पूछ ही लिया.
‘‘ तुम्हारी चूत तो बिल्कुल कुंवारी लग रही है...’’
‘‘ हां, शादी के बाद ५ महीने ही तो रहे हम.... ’’
मैंने उसकी टांगों को और थोड़ा फैलाया.... उसकी चूत थोड़ी और खुल गई. गुलाबी गुलाबी रस भरी चूत बड़ी प्यारी लग रही थी. मेरे मुंह में पानी आ गया और मैं तुरंत उसकी चूत पर झुक गया. मादक सी गंध आ रही थी उसकी चूत में से. मैंने धीरे से अपनी जीभ निकाली और उसकी चूत के होंठों पर रख दिया. वो सिसक पड़ी. हौले हौले मैं उसकी पूरी चूत के दराड़ को चाटने लगा. वो तिलमिलाने लगी, तड़पने लगी. मैंने अपनी जीभ के नोक को उसकी चूत के छेद में डाला और धीरे धीरे अंदर तक ले गया. अजीब सा टेस्ट महसूस हुआ. वो कुछ ज्यादा ही तड़पने लगी. मैं धीरे धीरे उसकी चूत को चाटता रहा और वो तड़पती रही. फिर मैंने अपना पूरा चेहरा उसकी चूत में छुपा लिया और जोर जोर से रगड़ने लगा. वो धीरे धीरे सिसकियां भरने लगी. और कुछ ही देर में उसकी सिसकियां चीखों में बदल गईं.

अब मैंने उसे उल्टा किया. पीछे का दृश्य और भी मजेदार था. पतली कमर के नीचे सुंदर सी गोल गांड और गांड के आसपास सुनहरे बाल.
मैंने उसकी चूत से बहुत सारा रस निकाला और उसकी गांड पर मल दिया. गांड बहुत चिकनी हो गई और चमकने लगी. मैं धीरे धीरे उसकी गांड का मसाज करने लगा. हाथ फिसल फिसल जा रहा था. कभी मेरी उंगलियां उसकी गांड के अंदर चली जातीं तो कभी उसकी चूत में.
चूत का रस था कि निकला ही जा रहा था और मैं उसी के रस से उसके सारे शरीर की मालिश कर रहा था. उसे बड़ा ही आनंद आ रहा था, जो मैं उसकी मधभरी आवाज की सिसकारी से महसूस कर रहा था.
अब मेरी बीच की उंगली बड़े आराम से उसकी गांड के छेद में जा रही थी. मैं उसके पास ही लेट गया और अपनी बीच की उंगली को उसकी गांड के छेद में उतारने लगा. दो तीन मिनट में ही पूरी उंगली उसकी गांड में चली गई और मैं बड़े आराम से अपनी उंगली से उसकी गांड की चुदाई करने लगा.

उसकी सिसकारी बंद ही नहीं हो रही थी. गांड में उंगली का मजा शायद वो पहली बार ले रही थी.
आखिर उससे रहा नहीं गया और वो बोली.... ‘‘ अपना लंड डाल दो मेरी गांड में... पेल दो... खूब जोर जोर से.... रुको नहीं एक भी पल....’’
मैं तुरंत पीछे से उसके ऊपर चढ़ गया. उसकी कमर के नीचे हाथ डाल कर थोड़ा ऊपर उठाया. उसकी गांड ऊंट की पीठ की तरह ऊपर हो गई. गांड का छेद साफ दिखाई दे रहा था. मेरे सहन का अंत हो चुका था. चूत में हाथ डाल कर मैंने फिर भरपूर रस अपने हाथों में लिया और उसे अपने लंड पे पूरी तरह मल दिया. लंड भी उसकी गांड की तरह चमकने लगा. पूरा चिकना हो गया. धीरे से मैंने अपना लंड उसकी गांड के

छेद पर रखा, जो अपने आप ही अंदर जाने लगा. मैंने बस थोड़ी ही मेहनत की और हल्का सा धक्का दिया. बस फिर क्या था, लंड यूं गांड के अंदर समा गया जैसे सांप बिल में फुररर से घुस जाता है. मुझे अपना सपना याद आ गया, जिसमें मैंने लाख कोशिश की थी गांड में लंड घुसाने की, मगर सफल न हो सका था. यहां तो लंड बड़े आराम से गांड में पूरी तरह समा गया था. वो हल्के से चीखी भी... मगर फिर चुप हो गई. मैं धीरे धीरे अपने लंड को उसकी गांड में अंदर बाहर करने लगा. वो सीं सीं की आवाज निकालने लगी. फिर ये आवाज कुछ ऊंची हो गई. मेरा लंड उसकी गांड के भीतर बड़े स्वादिष्ट तरीके से आ जा रहा था. मेरे नस नस को मजा मिल रहा था. शायद उसे भी. क्योंकि वो भी हाय, उफ, मर गई... कहती जा रही थी.
मक्खन की तरह कोमल गांड में मेरा लोहे की तरह कड़क लंड अंदर बाहर हो रहा था. कभी मैं उसकी गांड को ऊपर करता, तो कभी नीचे. उसकी गांड जब नीचे होती, तो मेरे लंड को बड़ा ही जबरदस्त दबाव मिलता जिससे मेरे रग रग में सनसनी सी दौड़ जाती. गांड के दोनों पाटों के बीच मेरा लंड यूं जकड़ा हुआ था, कि मैं सारी दुनिया को भूल गया था. अब वो अपनी गांड के दोनों पाटों से मेरे लंड को दबा रही थी, जिससे उसे भी खूब आनंद मिल रहा था. जब वो मेरे लंड को अपनी गांड के बीच में दबाती, तो मैं उसे आगे पीछे नहीं कर पाता. जब वो अपनी पकड़ ढीली कर देती तो मैं तुरंत अपने लंड को उसकी गांड से बाहर निकालता और फिर फचाक से अंदर डाल देता. ये खेल उसे बड़ा अच्छा लग रहा था. वो अपनी गांड को उचका उचका कर मेरी हिम्मत बंधा रही थी. जब भी वो अपनी गांड उचकाती, मेरा लंड पूरा का पूरा उसकी गांड के मखमली कमरे में समा जाता और मुझे एक करंट सा लगता.
ये खेल कुछ १० १५ मिनट ही चला और उसके बाद मेरे लंड ने अपना सारा रस उसकी गांड में उतार दिया. पूरा रस निकलने तक मैं उसकी गांड में धक्के मारता रहा. जब अंतिम बूंद भी निकल गया तो मैंने अपना लंड उसकी गांड से बाहर निकाला, जो उस वक्त भी लाल लाल और तमतमाया हुआ था.

वो सीधे लेट कर जोर जोर से सांस लेने लगी. यही हालत मेरी भी थी. कुछ देर हम यूं ही पड़े रहे. अचानक दरवाजे की घंटी बजी. रेशमा नंगी ही बाथरूम में भागी. मैंने जल्दी जल्दी कपड़े पहने. बालों को सीधा किया और दरवाजा खोला. दरवाजे पर रूम बॉय कम वेटर खड़ा था.
‘‘ क्या बात है? ’’ मैंने पूछा.
‘‘ साहब, कुछ नाश्ता वाश्ता.... ’’
‘‘ यार कुछ चाहिए होगा, तो इंटरकॉम से बोल देंगे न...’’
‘‘ सॉरी... मगर आपकी तरफ से मैसेज नहीं आया, तो इसीलिए मैनेजर ने भेजा कि...शायद आपको कुछ चाहिए होगा....’’
मैंने घड़ी देखी.... शाम के पांच बज रहे थे. मुझे हैरानी हुई कि इतनी जल्दी पांच कैसे बज गए. खैर मैंने उसे बियर और चिकन पकोड़े का ऑर्डर दिया और जल्द लाने के लिए कहा. वो आधे घंटे के बाद नाश्ता ले कर आया. तब तक हम दोनों ने इंतजार करना ही मुनासिब समझा.
भरपेट नाश्ता करने के बाद मैंने वेटर से खाली डिशेज ले जाने के लिए कहा और उसके जाते ही मैंने फिर दरवाजा बंद कर लिया. रेशमा भी उसी इंतजार में थी. उसने फटाफट कपड़े उतारे और मैंने भी.

एक बार फिर उसने मेरे लंड को अपने भीगे मुंह में लिया. चिकन पकोड़े और बियर से तरबतर उसकी

जीभ ने मेरे लंड में आग सी लगा दी.
वो अपनी जीभ से मेरे लंड को सराबोर करने लगी. छह इंच के लंड का यही फायदा है कि वो किसीके भी मुंह में पूरी तरह समा जाता है. और जिसका ये लंड है, उसी से पूछो कि पूरे लंड का मुंह में समा जाना कितने सौभाग्य की बात है.
अपने मुंह के अंतिम सिरे तक वो मेरे लंड को लीलती रही और बाहर निकालती रही. मेरे लंड को इससे पहले ये वरदान नहीं मिला था. वैसे तो तीन चार लड़कियों ने कॉक सकिंग की थी मेरी... पर आज जो अनुभव मुझे मिल रहा था, वो किसी अनुभवी नारी का ही काम था. लड़कियों ने तो ऐसे मेरे लंड को चूसा था जैसे लॉलीपॉप चूस कर फैंक देती हैं. उन्हें तो पानी निकालना भी नहीं आता था. कई बार उन्होंने अपने हाथों से ही मेरे लंड को तृप्ति दी थी.

रेशमा हलक तक मेरे लंड को ले रही थी और अंदर बाहर कर रही थी. फिर मैंने उसे दोबारा उल्टा लिटाया और कमर के नीचे हाथ डाल कर उसे घोड़ी बनने पर मजबूर किया. वो घोड़ी बन कर और भी सुंदर लगने लगी. पतली कमर के साथ उभरी हुई गांड का नजारा किसी के भी होश गंवाने के लिए काफी था.
वो घोड़ी की तरह चारों हाथ-पैर पर खड़ी थी. मैंने उसे और भी एडजस्ट किया, ताकि उसकी चूत बिल्कुल सीध में आ जाए. उसकी टांगों को थोड़ा और फैलाया. गुलाबी चूत दिखाई देने लगी. हल्की हल्की झांटे चूते के आसपास ऐसे खड़ी थीं, जैसे किसी खजाने की रखवाली के लिए सुरक्षाकर्मी खड़े हों.
गोरी जांघों पर हाथ फेर कर मैंने उसकी टांगों को फिर थोड़ा सा फैलाया. अब रसीली चूत चुदने के लिए पूरी तरह तैयार थी.
मैंने दो तकिए (Pillows) अपने घुटनों के नीचे रख लिए और अपने लंड को उसकी चूत की बिल्कुल सीध में ले आया. तीर की तरह तना मेरा लंड चूत के अंदर जाने के लिए बेकरार था. चिकनाई की जरा भी जरूरत नहीं थी. मैंने घुटनों के बल खड़े हो कर अपने लंड को उसकी टांगों के बीच में लगा दिया. फिर लंड को थोड़ा ऊपर करके उसकी दोनों टांगों के बीच ले आया. उसकी नरम नरम गांड मेरे पेट को छू रही थी. इसका भी कुछ अलग ही मजा था. मैंने अपने लंड को उसकी चूत के छेद में डाला और धीरे से धक्का दिया. आशा के विपरीत, मेरा लंड उसकी चूत में फंसने लगा. मुझे लगा था कि शायद आसानी से अंदर चला जाएगा. पर पता चला कि उसकी चूत काफी टाइट थी. ये सोच कर मुझे बहुत मजा आया. मैं धीरे धीरे धक्के मार कर अपने लंड को उसकी चूत में पूरी तरह घुसाने की कोशिश करने लगा. इसके लिए मुझे उसकी कमर को पकड़ कर आगे पीछे भी करना पड़ा. थोड़ी ही कोशिश में मेरा लौड़ा पूरी तरह उसकी टाइट चूत में अंदर बाहर होने लगा. डॉगी स्टाइल मेरा फेवरेट आसन है. इसमें जो मजा आता है, वो करने वाले को ही मालूम है. तना हुआ लंड चिकनी चूत में जा रहा था, आ रहा था. चूत के अंदर की नर्म हड्डी मेरे लंड के निचले भाग की हल्की हल्की मालिश कर रही थी. मेरे मुंह से लगातार आह आह की आवाज आ रही थी. रेशमा का भी वही हाल था. मैं उसकी गांड को पकड़ कर आगे पीछे कर रहा था और मजबूत लंड अंदर बाहर हो रहा था. लंड को ऐसी सेवा कभी कभी ही मिलती है.... और शायद चूत को भी.
अब मैंने वैसी ही डॉगी स्टाइल में उसे थामा. उसकी गांड को मजबूती से पकड़ कर मैं धीरे से पीठ के बल लेट गया. लंड उसकी चूत में ही था. वो मेरा लंड लिए उसी तरह धीरे से मेरी जांघों पर बैठ गई. अब मैं पीठ के बल लेटा था और वो मेरी जांघों पर बैठी थी. मेरा लंड उसकी चूत में ही दबा था.
उसने अपनी दोनों टांगें मेरी जांघों के आसपास रख दीं और संभल कर बैठ गई. अपने आपको एडजस्ट

किया और फिर ऊपर नीचे होने लगी. मेरा खड़ा लंड उसकी चूत में जा कर बाहर निकल रहा था.
वो बराबर ऊपर नीचे हो रही थी. उसका स्टेमिना अच्छा था. ये आसन उसके लिए शायद काफी मजेदार साबित हुआ. क्योंकि अब उसकी चूत से धड़ा धड़ पानी निकलने लगा और मेरे लंड और जांघों को तर करने लगा. उसने अपनी रफ्तार बढ़ा दी. अब वो चीखने लगी थी.
छकाछक छकाछक छकाछक.....लंड चूत के अंदर बाहर हो रहा था और वो उसी गति से चीख रही थी.
अचानक वो धम से मेरी जांघों पर बैठ गई और उसके मुंह से बड़ी जोर से आ..........ह निकला. वो पूरी तरह झड़ चुकी थी. मगर मैं अभी बाकी था.
उसने अपनी चूत से मेरे लंड को निकालने की कोशिश की. मगर मैने ऐसा नहीं होने दिया. मैंने मजबूती से उसकी गांड को पकड़ा और आगे पीछे करके उसे हिलाने लगा. मेरा लंड उसकी चूत में ही था.
मुझे उसका सहयोग नहीं मिल रहा था. इसलिए मेरा लंड उसकी चूत से बाहर आ गया. वो झट से बेड पर उल्टी ही लेट गई. मेरा पानी निकलना बाकी था. मैं भला उसे ऐसे कैसे छोड़ देता.
मैं फौरन पीछे से उसके ऊपर चढ़ गया. पहले तो वो कसमसाई, मगर फिर ढीली पड़ गई.
मैंने अपने तने हुए चिकने और भीगे लंड को उसकी गांड में उतारना चाहा. इसके लिए मुझे उसकी गांड को ऊपर उठाना था. मगर वो उठने के लिए राजी ही नहीं हो रही थी. मैं उसकी मजबूरी समझ रहा था.
आखिर मैंने दोनों तकिए उठाए और उसके पेट के नीचे रख दिया. इससे उसकी गांड कुछ ऊपर हो गई.
मैंने उसकी गांड के दोनों पाटों को अपने अंगूठों से हटाया तो भूरे रंग का छेद नजर आने लगा.
यही मेरी मंजिल थी, बल्कि मेरे लंड की मंजिल....
अपने तमतमाए हुए लंड को मैंने उसकी गांड के संकरी छेद पर रखा. अंगूठे से गांड की दोनों फांको को फैलाए रखा, ताकि छेद छुप न जाए.
लंड बराबर गांड की छेद पर था. गीला और चिकना तो वो था ही. धीरे से थोड़ा अंदर गया. हल्के हल्के धक्के मार के मैंने अपने लंड को पूरी तरह उसकी गांड में उतार ही दिया. पूरा लंड कभी कभी ही गांड में समाता है. वरना आधे लंड से ही काम चलाना पड़ता है. पूरे लंड की गांड चुदाई की बात ही कुछ और है.
उसे थोड़ी सी तकलीफ जरूर हुई, पर उसने प्रोटेस्ट नहीं किया. बीस पच्चीस धक्कों में ही मेरा काम बन गया. पूरी तरह उसकी गांड मार कर मैं निहाल हो गया. सारा बचा खुचा पानी निकल गया और मैं उसके ऊपर ही लेट गया.

रात को लगभग १० बजे घर आ कर मैंने जब हिसाब लगाया तो पता चला कि पांच हजार तक खर्च हो गए हैं. ये पैसे मैंने अपने जेब खर्च से बचा कर रखे थे. रेशमा से जल्द ही दोबारा मिलने का वादा तो कर लिया था, पर दोबारा पांच हजार जमा करने के लिए मुझे क्या क्या पापड़ बेलने पड़ेंगे, वो मुझे ही मालूम था.....रेशमा को नहीं.

With Love by Gulfaam Khan

≅φ≅φ≅φ≅φ≅φ≅